1802

1-10-18

सोमवार

❀ आत्मा ❀

आप जैसे हो वैसे
ही अपने आप को
स्विकार कर लो
तो "ह्यान" भी आपको
स्विकार कर लेगा

बाबा स्वामी
1-10-18

1803

2-10-18

मंगलवार

❀ आत्मा ❀

अपने आप को बदलने
का प्रयत्न मत करो
क्योकी सारे प्रयत्न
"शरीर" से ही होगे।

बाबास्वामी
2/10/18

1004

3-10-18

बुधवार

❀ आत्मा ❀

शरीर से हम ध्यान
नहीं करते हैं। ध्यान
तो एक "प्रेम" है, जो
किया नहीं जाता हो
जाता है।

बाबास्वामी
3/10/18

1805
4-10-18
गुरुवार

आत्मा

ध्यान तो आत्मा
का "भोजन" है।
वह भी नियमीत
और शुद्ध व सात्वीक
करने की आवश्यकता
होती है।

बाबारामसी
4/10/18

1906

5-10-18

शुक्रवार

✿ आत्मा ✿

ध्यान रूपी आत्मा
के भोजन मे "अपेक्षा"
रूपी मिलावट नही
होना चाहीये।

बाबास्वामी
5/10/18

1807
6-10-18

शनिवार

आत्मा

"ध्यान" जितना शुद्ध
और सात्वीक होगा
आत्मा उतनी ही
बलवान व स्वस्थ
होगी

बाबास्वामी
6/10/18

1908
7-10-18
रविवार

आत्मा

"पुजाघर" और "प्राथना स्थल" हम पहले ही अपेक्षा से अशुद्ध कर चुके है। अब केवल ध्यान का "माध्यम" ही बचा है। उसे अशुद्ध न करे

बाबास्वामी
7/10/18

1809
8.10.18

सोमवार

🏵 आत्मा 🏵

अपेक्षा रहीत ध्यान
ही "सर्वोत्तम" ध्यान
होता है।

बाबा स्वामी
8/10/18

1910

9-10-18

मंगलवार

आत्मा

ध्यान साधना के लिये नवरात्री का काल "सर्वोत्तम" होता है।

बाबास्वामी

9/10/18

|511|

10-10-18

बुधवार

❀ आत्मा ❀

आज से ही नवरात्रि
का ध्यान का
"सर्वोत्तम" काल प्रारंभ
हो रहा है।

बाबास्वामी
10|10|18

1812

11-10-18

गुरुवार

आत्मा

"नवरात्री" के सर्वोत्तम काल मे "ध्यान" और "गुरु सानीध्य" कार्य के लिये "दुग्ध शकरी" योग है।

आशीर्वाद स्वामी
11/10/18

1813
12-10-18

शुक्रवार

आत्मा

एक लाख दिन ध्यान करना और "गुरु सानीध्य" मे एक दिन ध्यान करना समान है।

बाबास्वामी
12/10/18

1815
13-10-18
शनीवार

आत्मा

"सदगुरु" किसी भी
क्षण अकेला नहीं
होता "लाखो आत्माएं"
उसके साथ प्रत्येक
"क्षण" जुडी होती ही है।

बाबास्वामी
13/10/18

1815
14-10-18

रविवार

आत्मा

आप जब भी सदगुरु पर चित्त रखते है, आपको सामुहीक शक्ती का "चैतन्य" अनुभव होता है।

बाबास्वामी
14/10/18

1016
15-10-18

सोमवार

❀ आत्मा ❀

हम सद्गुरु को क्या
मानते है, इस पर
ही हमारी "गुण ग्राहकता"
निर्भर करती है।

बाबास्वामी
15/10/18

1017
16-10-18
मंगलवार

ॐ आत्मा ॐ

हम अगर सद्‌गुरु को सामुहिक शक्ती का "माध्यम" मानते है, तो ही हम उससे सामुहिकता का चैतन्य अनुभव कर सकते है।

बाबास्वामी
16/10/18

1818

17-10-18

बुधवार

आत्मा

जिवन मे सबकुछ पाना
अपनी "गुण ग्राहकता"
पर निर्भर करता है,

बाबास्वामी
17/10/18

1919
18-10-18

गुरुवार

आत्मा

हमारी गुणग्राहकता
सदैव "वर्तमान" समय
मे ही होती है।

बाबास्वामी
18/10/18

"दशहरा" पर आप सभी को
खूब खूब आशीर्वाद

बाबास्वामी
18/10/18

1020
19-10-18

शुक्रवार

आत्मा

कुछ भी ग्रहण करना
एक "जिवंन्त" प्रक्रीया
है,

बाबास्वामी
19|10|18

1021

20-10-18

शनिवार

आत्मा

वर्तमान का प्रत्येक क्षण
हमारे "भविष्य" काल की
निर्मीती करता है।

बाबा स्वामी
20/10/18

1022

21-10-18

रविवार

❀ आत्मा ❀

"आध्यात्मिक प्यास"

लगाना ही आवश्यक

है, वह लगे बीना

पानी का महत्व

समझा नही जा सकता।

बाबा स्वामी

21/10/18

1823

22-10-18

सोमवार

ॐ आत्मा ॐ

"प्यास" लगने पर पहले
शरीर से प्रयास होते
है, जो असफल ही
होते हैं,

बाबा स्वामी
22/10/18

1024

23-10-18

मंगलवार

❀ आत्मा ❀

जब शरीर के प्रयास से
पानी [परमात्मा] नही
मिलता तो "प्रार्थना"
का जन्म होता है।

ओशोस्वामी

23/10/18

1825

24-10-18

बुधवार

आत्मा

जब प्रार्थना से भी
पानी [परमात्मा] नहीं
मिलता तो "रोना"
प्रारंभ हो जाता है,

बाबास्वामी
24/10/18

1026

25-10-18

गुरूवार

आत्मा

पानी [परमात्मा] के लिये रोना मनुष्य के "अंहकार" को नष्ट करता है।

बाबास्वामी
25|10|18

1027
26.10.18

शुक्रवार

आत्मा

मनुष्य जैसे जैसे
रोता है, वैसे वैसे
उसका अंहकार [मैं]
"पिघलने" लगता है,

बाबास्वामी
26/10/18

1028

27-10-18

शनिवार

आत्मा

जैसे जैसे [मैं] का "अंहकार" पिघलने लगता है, मनुष्य के भितर से ही परमात्मा प्रगट होने लगता है।

बाबास्वामी

27|10|18

1029

28-10-18

रविवार

❀ आत्मा ❀

शरीर के "अंहकार" के
साथ कभी भी "परमात्मा"
को पाया नही जा सकता

बाबा स्वामी
28/10/18

1030

29-10-18

सोमवार

❀ आत्मा ❀

"परमात्मा" कोई शब्द नही है, जो पुस्तको मे प्राप्त हो। वह एक जिंवन्त अनुभुती है।

बाबास्वामी
29/10/18

1031

30-10-1

मंगलवार

❀ आत्मा ❀

पुस्तके निर्जिव है, "परमात्मा" सजीव है, इस लिये पुस्तको से "परमात्मा" की अनुभुती कभी नही हो सकती है,

द्वारकाधीश

30/10/18